मेघमार्ग वर्णन

मेघदूत एक महत्वपूर्ण गीतिकाव्य है जो महाकवि कालिदास की प्रतिभा की अनोखी कसौटी है। महाकवि की कविता की प्रवृत्ति 'प्रकृति प्रेम की मनोरम छटा, रीतिप्रियता, रसमाधुरी, प्रसाद गुणप्रियता एवं कोमल पदावली से युक्त उपमा की स्वाभाविकता' को लेकर हुई है। जिसकी श्रृङ्खला में सर्वथा विप्रलम्भ श्रृङ्गार से मण्डित तथा अर्थान्तरन्यास की बाहुलता से परिपूर्ण मेघदूत भी है जिसकी अवतारणा अतिशय मर्मस्पर्शी है। सुना जाता है कि हेममाली नाम का कोई यक्ष अलका नाम की नगरी में रहता था जो नवोढा पत्नी के प्रेम में आसक्त अपने सेवाकार्य में प्रमाद के कारण स्वामी कुबेर के शाप से ग्रसित अत एव अलका से एक वर्ष के लिये निर्वासित होकर रामगिरि के आश्रमों में निवास करता था। इसने कुछ महीने बिताने के बाद आषाढ के प्रथम दिन कामी हृदय को सन्तापित करनेवाले मेघ को देखा और काम से पीड़ित होकर चेतन एवं अचेतन का विचार किये बिना ही मेघ से अपनी प्रियतमा के पास सन्देश भेजने के लिये उद्यत हो गया। इसी सन्दर्भ में रामगिरि से लेकर अलका तक के मार्गों का वर्णन किया।

यक्ष मेघ से कहता है कि हे मेघ! यह सुनिश्चित है कि तुम्हे यक्षों की नगरी अलका को जाना है — गन्तव्या ते वसतिरलका नाम यक्षेश्वराणाम्। अतः अपने मित्र रामगिरि का आलिङ्गन कर इससे आज्ञा लेकर अपने प्रयाण के अनुरूप मार्ग की (उत्तर) ओर प्रस्थान करो। यद्यपि तुम्हे लम्बी यात्रा करनी है इसलिये जब भी तुम्हे थकान लगे पर्वत शिखरों पर विश्राम कर लेना और जब-जब भी कमजोरी लगे (भूख-प्यास) तो नदियों का पानी पी लेना —

खिन्नः खिन्नः शिखरिषु पदं न्यस्य गन्तासि यत्र।
क्षीणः क्षीणः परिलघुपयः स्रोतसां चोपभुज्य॥

सर्वप्रथम यहाँ (रामगिरि) से आगे बढ़ने पर तुम 'माल प्रदेश' पहुँचोगे जहाँ स्नेहभरी भ्रूविलासों से अनभिज्ञ ग्रामवधुयें तुझे प्रेमपूर्ण नयनों से देखेंगी। चूकि कृषिफल तुम्हारे अधीन है अतः वहाँ की भूमि को सिञ्चित करते हुये उत्तर दिशा की ओर जाना। आगे जाने पर तुझे आम्रकूट पर्वत मिलेगा जिसकी जंगलों में लगी दावाग्नि को बुझाने के कारण तथा मार्ग से श्रान्त होने के कारण वह तुझे अवश्य आश्रय देगा क्योंकि जब निम्नकोटि का व्यक्ति भी पूर्व उपकार का स्मरण करके नत पड़ने पर मित्र को सहारा देता है तो इतने ऊँचे व्यक्तित्ववाला आम्रकूट तुम्हे सहारा क्यों नहीं देगा? (अर्थात् अवश्य देगा) —

त्वामासारप्रशमितवनोपप्लवं साधु मूर्ध्ना,
वक्ष्यत्यध्वश्रमपरिगतं सानुमानाम्रकूटः।
न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय,
प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः॥

यक्ष मेघ से कहता है कि आम्रकूट पर वर्षा करने के अनन्तर कुछ मार्ग को लाँघकर जब आगे बढ़ोगे तो विन्ध्याचल के विषमप्रान्त में बिखरी हुई नर्मदा (रेवा) नदी दिखाई देगी। इसलिये वान्तवृष्टि होने से रिक्त हुये तुम जंगली हाथियों

के अंगों से सुगन्धित तथा जामुनों के कुञ्जों से टकराकर बहने वाली अत एव जम्बूफलों से मिश्रित जिस नर्मदा नदी का जल पान करते हुये आगे जाना। तब आम्रकूट को पार करोगे तो कुछ दूर बढ़ने पर तुम्हें 'दशार्ण' प्रदेश मिलेगा। जिसके आन्तर प्रदेश में केतकी के फूलों से पीले प्राचीरों से युक्त उपवनों तथा पके हुये अत एव श्यामवर्ण के जामुनों के वृक्ष समूह को देखोगे। उसके बाद दशार्ण की राजधानी विदिशा पहुँचकर कामुकता का सम्पूर्ण फल पाओगे। वहाँ वेत्रवती नदी मिलेगी जिसके किनारे (जल पीने को उतरते हुये तुम मधुर गर्जना करना) जिससे वह कामोत्सुका सी तिरछी कटाक्ष से देखेगी तब तुम झुककर (इसके) सरस होंठ को चूम लेना——

तेषां दिक्षु प्रथितविदिशालक्षणां राजधानीं,
गत्वा सद्यः फलमविकलं कामुकत्वस्य लब्धा।
तीरोपान्तस्तनितसुभगं पास्यसि स्वादु यस्मा-
त्सभ्रूभङ्गं मुखमिव पयो वेत्रवत्याश्चलोर्मि॥

तदनन्तर विदिशा में ही पूर्ण विकसित फूलोंवाले कदम्बवृक्षों से युक्त 'नीचगिरि' नामक पर्वत पर कुछ देर ठहरकर थकान मिटा लेना (तथा वन की नदियों के तटों में उपवन उद्यानों की जूही की कलियों को नये जलबिन्दुओं से सिंचित करते हुये आगे बढ़ना) यद्यपि उत्तर दिशा की ओर प्रस्थित तुम्हारा रास्ता अवश्य टेढ़ा होगा तथापि उज्जयिनी के प्रासादों के ऊर्ध्वभाग का परिचय करने से विमुख मत होना क्योंकि वहाँ बिजली की रेखा की चमक से चञ्चल कटाक्षों वाली, नागरिक सुन्दरियों के नयनों से यदि क्रीड़ा नहीं करोगे तो (जन्म साफल्य से) वञ्चित हो रह जाओगे——

वक्रः पन्था यदपि भवतः प्रस्थितस्योत्तराशां,
सौधोत्सङ्गप्रणयविमुखो मा स्म भूरुज्जयिन्याः।
विद्युद्दामस्फुरितचकितैस्तत्र पौराङ्गनानां,
लोलापाङ्गैर्यदि न रमसे लोचनैर्वञ्चितोऽसि॥

अतः (करधनी बजाती, नाभि प्रदर्शन करती) सुन्दर बलखाती हुई निर्विन्ध्या नदी का प्रणय स्वीकार करते हुये स्वर्ग के एक टुकड़े के समान विशाल वैभव से सम्पन्न उस विशाला पुरी का अनुसरण करना। यक्ष उज्जयिनी वर्णन प्रसङ्ग में ही मेघ को शिप्रा की सुरभित वायु का परिचय कराता है एवं महाकाल के मन्दिर में जाकर सान्ध्यकाल में होने वाले पूजन के समय अपने गर्जन से नगाड़े के कार्य को सम्पादित करने तथा उससे मिलने वाले अखण्ड फल को प्राप्त करने का परामर्श देता है। तत्पश्चात् यक्ष मेघ से कहता है कि हे मेघ! (यहाँ से अग्रसर होने पर) पथ में तुम्हें गम्भीरा नदी मिलेगी जिसको पार कर देवगिरि पर्वत पर चले जाना और वहाँ स्वामी कार्तिकेय (स्कन्द) का आकाशगङ्गा के जल से भीगे हुये पुष्पों की वृष्टि से अभिषेक करना। उसके बाद महाराज रन्तिदेव की कीर्ति—

रूपी - चर्मण्वती नदी का सत्कार करके ब्रह्मावर्त पर्वत को ढकते हुये क्षत्रियों के युद्ध सूचक अतिप्रसिद्ध कुरुक्षेत्र के लिये प्रस्थान करना —

ब्रह्मावर्तं जनपदमथच्छायया गाहमानः
क्षेत्रं क्षत्रप्रधनपिशुनं कौरवं तद्भजेथाः ।

और वहाँ सरस्वती नदी के सुस्वादु जल का पान करना।
हे मेघ! जब कुरुक्षेत्र का अतिक्रमण करोगे तब कनखल पर्वत के समीप (हिमा-लय से उतरी हुई सगर के पुत्रों का स्वर्गयात्रा में सीढ़ी का काम करने वाली) जह्नु की कन्या गङ्गा मिलेगी —

तस्माद्गच्छेरनुकनखलं शैलराजावतीर्णां
जह्नोः कन्यां सगरतनयस्वर्गसोपानपङ्क्तिम् ।

कनखल से जब आगे बढ़ोगे तो तुम्हें हिमालय का दर्शन होगा। वहाँ तुम किसी शिला पर प्रगट और योगिओं के द्वारा निरन्तर पूजित शिव जी के चरण चिन्हों का भक्ति से नम्र होकर प्रदक्षिणा करना — (1)

तत्र व्यक्तं दृषदि चरणन्यासमर्धेन्दुमौलेः
शश्वत्सिद्धैरुपचितबलिं भक्तिनम्रः परीयाः ।

और इसके बाद कस्तूरियों से सुगन्धित वायु का आनन्द लेते हुये, मीठे स्वर में गाती हुई किन्नरियों के दर्शन करते हुये, हिमालय की अनुपम सौन्दर्य को निहारते हुये ऊपर की ओर जाकर (रावण की भुजाओं के द्वारा ढीले कर दिये गये हैं जोड़ जिसके ऐसे) देवसुन्दरियों के दर्पण तुल्य कैलास पर्वत का अतिथि बनना और सुवर्ण कमलों को उत्पन्न करने वाले मानस सरोवर से व्याप्त उस पर्वतराज का यथेच्छ आनन्द लेना। अन्त में यक्ष कहता है कि इसी पर्वतराज हिमालय की गोद में (प्रवाहमान गङ्गा से युक्त) हमारी, प्रिय (अत्यन्त) 'अलका-पुरी' बसी हुई है जिसे देखकर तुम अवश्य ही पहचान जाओगे। (3)

इस प्रकार महाकवि कालिदास ने यक्ष के माध्यम से रामगिरि पर्वत से लेकर अलका पर्यन्त के भौगोलिक वर्णन को (~~शब्दों के माध्यम से~~) मार्गदर्शन के रूप में प्रस्तुत किया है जो उनके भौगोलिक ज्ञान को परि-पुष्ट करता है।

अन्यथा चञ्चल कटाक्षों के लाभ रमण न कर पाने से वञ्चित रह जाओगे।
उज्जयिनी पहुँचके पर महाकाल के सान्ध्यकालीन पूजन में सम्मिलित होना तथा शिप्रा की सुरभि वायु से श्रम दूर कर उस रात्रि के (उज्जयिनी) विताके अनन्तर प्रातः होते ही शेष मार्ग तय करना — दृष्टे सूर्ये ....॥
(1) और इसके अनन्तर क्रौञ्चरन्ध्र को पार करते हुये (2)
(3) न त्वां दृष्ट्वा न पुनरलकां ज्ञास्यसे कामचारिन् ।
इस प्रकार कान्ताविरह सन्ताप से सन्तप्त यक्ष अपनी प्रिया के पास सन्देश प्रेषित करने के लिये सन्देश वाहक बनाकर मेघ को रामगिरि पर्वत से अलका तक (भेजा)